।। ग्रहवर्षफलाध्यायः ।।

सर्वत्र भूर्विरलसस्ययुता वनानि
दैवाद् बिभक्षयिषुदंष्ट्रिसमावृतानि।
नद्यश्च नैव हि पयः प्रचुरं स्रवन्ति
रुग्भेषजानि न तथातिबलान्वितानि।। 1।।
तीक्ष्णं तपत्यदितिजः शिशिरेऽपि काले
नात्यम्बुदा जलमुचोऽचलसन्निकाशाः।
नष्टप्रभर्क्षगणशीतकरं नभश्च
सीदन्ति तापसकुलानि सगोकुलानि।। 2।।
हस्त्यश्वपत्तिमदसह्यबलैरुपेता
बाणासनासिमुशलातिशयाश्चरन्ति।
घ्नन्तो नृपा युधि नृपानुचरैश्च देशान्
संवत्सरे दिनकरस्य दिनेऽथ मासे।। 3।।

जिस वर्ष का स्वामी सूर्य हो तो सम्पूर्ण देश में फसलों की पैदावार कम होती है। जंगलों में जंगली जानवरों की संख्या बढ़ती है। वे प्रायः अधिक हिंसक हो जाते हैं। नदियों में पानी कम होता है। वन्य औषधियों व जड़ी बूटियों की ताकत भी घट जाती है। अर्थात् उनकी गुणवत्ता हल्की रहती है।

उस साल शिशिर ऋतु (माघ मासादि) में भी सूर्य की धूप तेज होती है। आकाश में बादलों की घनघोर घटाएँ उठती हैं, लेकिन वर्षा कम ही होती है। चन्द्रमा व तारों की चमक कम दिखती है। तपस्वी जन व गोवंश को पीड़ा होती है।

Scanned with CamScanner

राजा लोग संग्राम में अपने सहयोगियों के साथ सर्वत्र घमासान करते हुए घूमते हैं। हाथी, घोड़े व पैदल सेना से युक्त बल के साथ राजा लोग विचरण या चढ़ाई करते हैं। अस्त्र शस्त्रों की प्राप्ति, रख-रखाव या शस्त्रास्त्र प्रयोग की होड़ सी रहती है।

यवनेश्वर ने सूर्य वर्षेश होने पर नेत्र रोग, कोई संक्रामक रोग, अग्नि के उत्पात व विष या रसायनभय की बात अतिरिक्त कही है। समास संहिता में स्वयं आचार्य ने इस वर्ष में चोरी डकैती, राहजनी, ठगी आदि की वृद्धि भी मानी है–

तीक्ष्णोऽर्कः स्वल्पसस्यश्च गतमेघोऽतितस्करः।
बहूरगव्याधिगणो भास्कराब्दो रणाकुलः।। (समाससंहिता)

आजकल चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को नव संवत्सरारम्भ के दिन जो वार हो, उसे ही वर्षपति मान लेते हैं।

सूर्य सिद्धान्त के आधार पर बनाई गई मकरन्द सारिणी में भी यही परिपाटी कही गई है। लेकिन सूर्य सिद्धान्त में सावन अहर्गण द्वारा भी वर्षपति जानने की विधि बताई गई है। सावन वर्षारम्भ का वर्षेश व प्रचलित रीति का वर्षेश अलग हो जाता है। ग्रहों की कक्ष्या के क्रम से शनि से नीचे की ओर चलते हुए तीसरा ग्रह भी वर्षेश होता जाता है।

मन्दादधः क्रमेण स्युश्चतुर्था दिवसाधिपाः।
वर्षाधिपतयस्तद्वत् तृतीयाश्च प्रकीर्तिताः।। (सू. सिद्धान्त)

इस विधि को वार क्रम से चलाने पर चौथा ग्रह समझना चाहिए। दोनों ही स्थितियों में समान परिणाम होते हैं। लेकिन वास्तव में **वर्षारम्भ के दिन जो वार हो, वही वर्षपति है,** यह नियम प्रचलित व उपयुक्त ही है। जिस ग्रह का जो फल वर्षेश होने पर कहा है, वही फल मासेश होने पर मास में व दिनेश होने पर वार में भी समझना चाहिए। उक्त सूर्य सिद्धान्तीय नियम सावन वर्षेश जानने में उपयोगी हैं। लेकिन आजकल पंचांगों में चान्द्र वर्ष, सौर वर्ष का प्रचलन है। अतः सौर वर्षारम्भ या चान्द्र वर्षारम्भ का प्रथम वारपति ही वर्षेश है। सौर वर्षारम्भ मेषार्क से होता है। उस वार ग्रह को आजकल मन्त्री कहते हैं। अतः हमारे विचार से यहाँ बताया जाने वाला फल मन्त्री ग्रह के विषय में भी न्यूनाधिक रूप से लागू होगा।

चन्द्र वर्षेश का फल :

व्याप्तं नभः प्रचलिताचलसन्निकाशैर्व्यालाञ्जनालिगवलच्छविभिः पयोदैः।
गां पूरयद्भिरखिलाममलाभिरद्भिरुत्कण्ठितेन गुरुणा ध्वनितेन चाशाः।। 4।।

Scanned with CamScanner

तोयानि पद्मकुमुदोत्पलवन्त्यतीव फुल्लद्रुमाण्युपवनान्यलिनादितानि।
गावः प्रभूतपयसो नयनाभिरामा रामा रतैरविरतं रमयन्ति रामान्।। 5।।
गोधूमशालियवधान्यवरेक्षुवाटा भूः पाल्यते नृपतिभिर्नगराकराढ्या।
चित्यङ्किता क्रतुवरेष्टिविघुष्टनादा, संवत्सरे शिशिरगोरभिसम्प्रवृत्ते।। 6।।

चन्द्रमा के वर्ष, मास व दिन में बादल खूब होते हैं। बादलों का रूप बड़े-बड़े पहाड़ों जैसा होता है। काजल, साँप व भँवरे के समान काले बादल होते हैं। वे बादल पृथ्वी को जलमग्न कर देते हैं। अर्थात् खूब गरज के साथ वर्षा होती है। खूब जल, खूब कमल खिले हुए उद्यान, फलयुक्त वृक्ष, भँवरों की गुंजार, गायों का अधिक दूध, स्त्री पुरुषों में प्रेम की अधिकता, सौन्दर्य वृद्धि, राजा लोगों की कर्त्तव्य परायणता, नगरों में खूब वृद्धि, अन्नादि के बड़े भण्डार, बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन, वेद पाठादि फल होते हैं।

मंगल के वर्ष का फल :

वातोद्धतश्चरति वह्निरतिप्रचण्डो
ग्रामान् वनानि नगराणि च सन्दिधक्षुः।
हाहेति दस्युगणपातहता रटन्ति
निःस्वीकृता विपशवो भुवि मर्त्यसंघाः।। 7।।
अभ्युन्नता वियति संहतमूर्तयोऽपि
मुञ्चन्ति कुत्रचिदपः प्रचुरं पयोदाः।
सीम्नि प्रजातमपि शोषमुपैति सस्यं
निष्पन्नमप्यविनयादपरे हरन्ति।। 8।।
भूपा न सम्यगभिपालनसक्तचित्ताः
पितोत्थरुक्प्रचुरता भुजगप्रकोपः।
एवंविधैरुपहता भवति प्रजेयं
संवत्सरेऽवनिसुतस्य विपन्नसस्या।। 9।।

मंगल के वर्ष. मास व दिन में अग्नि का खूब भय, भयंकर अग्नि काण्ड, तेज हवाएँ, बस्ती, नगर, पत्तन व वनों में अग्निकाण्ड, डाकुओं व चोरों का घना आतंक, सर्वत्र हाहाकार, धन व पशुओं की हानि होती है।

Scanned with CamScanner

खूब घटाएँ छाने पर भी कहीं पर वर्षा व कहीं सूखा होता है। पानी अधिक चाहने वाली फसलों का नाश होता है। खड़ी फसलों को बिजली, असम वर्षा व अन्य प्राकृतिक उत्पातों से बड़ी हानि होती है।

राजा लोग, प्रजापालन में कोताही बरतते हैं। पित्त के रोगों की अधिकता होती है। सर्पादि जन्तु (रोगाणु सहित) का भय खूब होता है।

बुध के वर्ष का फल :

मायेन्द्रजालकुहकाकरनागराणां गान्धर्वलेख्यगणितास्त्रविदां च वृद्धिः।
पिप्रीषया नृपतयोऽद्भुतदर्शनानि दित्सन्ति तुष्टिजननानि परस्परेभ्यः।। 10।।

वार्ता जगत्यवितथा विकला त्रयी च
सम्यक् चरत्यपि मनोरिव दण्डनीतिः।
अध्यक्षरस्वभिनिविष्टधियोऽपि केचि-
दान्वीक्षिकीषु च परं पदमीहमानाः।। 11।।
हास्यज्ञदूतकविबालनपुंसकानां
सुक्तिज्ञसेतुजलपर्वतवासिनां च।
हार्दिं करोति मृगलाञ्छनजः स्वकेऽब्दे
मासेऽथवा प्रचुरता भुवि चौषधीनाम्।। 12।।

बुध के वर्षादि में ढोंगी, पाखण्डी, ठगों व शातिरों की खूब चलती है। अनोखे कर्म करने वाले, गान विद्या में निपुण, नागरिक जन, चित्रकारों व लेखकों की खूब वृद्धि होती है। गणितवेत्ता व युद्ध कुशल लोग उन्नति करते हैं। राजा लोगों के व्यवहार में परस्पर अनपेक्षित परिवर्तन आते हैं।

वार्ताकारों (संवाददाता, पत्रकार) की वृद्धि, पशुपाल, कृषि व व्यापार की वृद्धि होती है। वेदों का प्रचार होता है। कानूनों का यथासम्भव पालन होता है। धार्मिक कानूनों का सख्ती से पालन किया जाता है।

अध्यात्मविद्या व योगविद्या का प्रचार, दण्डनीति, तर्कशास्त्र का भी प्रचार होता है। विदग्ध, सभा चतुर, हास्यप्रिय लोगों (अभिनेताओं) दूतों, कवियों, विद्वानों, बालकों, नपुंसकों, तकनीकी विशेषज्ञों, बड़े पुलों के पास रहने वालों, पर्वतीय लोगों के हृदय में विशेष सन्तुष्टि रहती है। नई-नई दवाओं की खोज होती है।

Scanned with CamScanner

बृहस्पति के वर्ष का फल :

ध्वनिरुच्चरितोऽध्वरे द्युगामी विपुलो यज्ञमुषां मनांसि भिन्दन्।
विचरत्यनिशं द्विजोत्तमानां हृदयानन्दकरोऽध्वरांशभाजाम्।। 13।।
क्षितिरुत्तमसस्यवत्यनेकद्विपपत्त्यश्वधनोरुगोकुलाढ्या।
क्षितिपैरभिपालनप्रवृद्धा द्युचरस्पर्द्धिजना तदा विभाति।। 14।।
विविधैर्वियदुन्नतैः पयोदैर्वृतमुर्वी पयसाभितर्पयद्भिः।
सुरराजगुरोः शुभे तु वर्षे बहुसस्या क्षितिरुत्तमर्द्धियुक्ता।। 15।।

बृहस्पति के शुभ वर्षों (अशुभ नाम वाले संवत्सरों को छोड़कर) में ब्राह्मण लोगों का वेदपाठ बढ़ता है। बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन होता है। लोगों के कानों में ऐसे मन्त्र स्वर पड़ते हैं, जिससे मन की प्रसन्नता, राक्षसों का नाश व देवताओं की प्रसन्नता बढ़ती है।

पृथ्वी पर सुशासन रहता है। खूब फसल होती है। अच्छे अनाज पैदा होते हैं। सेना के अंगों की खूब बढ़ोत्तरी होती है। धन वृद्धि, पशुधन वृद्धि, देवतुल्य आचार का प्रचार, खूब वर्षा, समयानुसार वर्षा व खुशहाली होती है।

शुक्र के वर्ष का फल :

शालीक्षुमत्यपि धरा धरणीधराभ धाराधरोज्झितपयःपरिपूर्णवप्रा।
श्रीमत्सरोरुहतताम्बुतडागकीर्णा योषेव भात्यभिनवाभरणोज्ज्वलाङ्गी।। 16।।
क्षत्रं क्षितौ क्षपितभूरिबलारिपक्षमुद्घुष्टनैकजयशब्दविरावितांशम्।
संहृष्टशिष्टजनदुष्टविनष्टवर्गा गां पालयन्त्यवनिपा नगराकराढ्याम्।। 17।।
पेपीयते मधु मधौ सह कामिनीभिर्जेगीयते श्रवणहारि सवेणुवीणम्।
बोभुज्यतेऽतिथिसुहृत्स्वजनैः सहान्नमब्दे सितस्य मदनस्य जयावघोषः।। 18।।

शुक्र के वर्ष में उत्तम चावल व अनाज की खूब पैदावार, ईख की उत्तम फसल, खूब यथोचित वर्षा, धरती की नायिका के समान शोभा होती है। तालाबों में खूब कमल खिलते हैं अर्थात् फूलों की पैदावार खूब होती है। सेना का खूब प्रयोग, सेना की न्यूनता, सर्वत्र विजयघोष, सज्जनों की रक्षा, दुष्टों को दण्ड, धनी लोगों की वृद्धि होती है।

बसन्त ऋतु में फूलों के रस की वृद्धि, शहद की अधिकता, शराब या विलासितापूर्ण पदार्थों का खूब प्रचार, संगीत सभाओं का आयोजन, खूब अतिथि सत्कार, मित्रों का उत्तम स्वागत, काम-वासना (विलासिता, भोग प्रधानता) की वृद्धि होती है।

Scanned with CamScanner

शनि के वर्ष का फल :

उद्वृत्तदस्युगणभूरिरणाकुलानि
राष्ट्राण्यनेकपशुवित्तविनाकृतानि।
रोरूयमाणहतबन्धुजनैर्जनैश्च
रोगोत्तमाकुलकुलानि बुभुक्षया च।। 19।।
वातोद्धताम्बुधरवर्जितमन्तरिक्ष-
मारुग्णनैकविटपं च धरातलं द्यौः।
नष्टार्कचन्द्रकिरणातिरजोऽवनद्धा
तोयाशयाश्च विजलाः सरितोऽपि तन्व्यः।। 20।।
जातानि कुत्रचिदतोयतया विनाश-
मृच्छन्ति पुष्टिमपराणि जलोक्षितानि।
सस्यानि मन्दमभिवर्षति वृत्रशत्रु-
र्वर्षे दिवाकरसुतस्य सदा प्रवृत्ते।। 21।।

शनि के वर्ष में, चोरों, डाकुओं व उद्धत आतंक प्रधान लोगों की वृद्धि होती है। आतंक के कारण राजनैतिक स्थिरता प्रभावित होती है। धन व जन की हानि होती है। लोगों में रोग व भुखमरी फैलती है। अपने निजी जनों के संकट व कष्ट के कारण लोग रोते रहते हैं।

आकाश में बादलों की कमी होती है। हवाएँ खूब चलती हैं। बड़े-बड़े पेड़ टूट जाते हैं। सूर्य व चन्द्रमा की किरणें टूटी हुई सी दिखती हैं। पानी मैला होता है। नदियों में जल की कमी रहती है। वर्षा कम होती है। कहीं पर वर्षा की अनियमितता के कारण खड़ी फसलें नष्ट होती हैं। कहीं पर समुचित पैदावार होती है।

वर्तमान संवत् 2052 का राजा शनि है। इस वर्ष में हत्या, अपहरण, बलात्कार, चोरी, जालसाजी, आतंकवाद के कारण राजनैतिक अस्थिरता, मंहगाई, असमान वर्षा आदि हुई ही है।

फल निर्देश का विशेष नियम :

अणुरपटुमयूखो नीचगोऽन्यैर्जितो वा
न सकलफलदाता पुष्टिदोऽतोऽन्यथा यः।
यदशुभमशुभेऽब्दे मासजं तस्य वृद्धिः,
शुभफलमपि चैवं याप्यमन्योन्यतायाम्।। 22।।

Scanned with CamScanner

जो ग्रह सम्भवतः वर्षारम्भ में मासारम्भ में नीचगत, कम किरणों वाला, ग्रह युद्ध में पराजित होता है, उसका उक्त शुभ फल सम्पूर्ण नहीं होता है, अपितु कहा गया अशुभ फल अधिक होता है।

इसके विपरीत शुभ राशिगत, उच्चस्थ, विजयी हो तो शुभ फल अधिक होते हैं।

सूर्य, मंगल व शनि के वर्ष में जिन मासों में पाप ग्रहों को ही मासेशता मिली हो, उनमें अशुभ फल अधिक होते हैं। मासेश व वर्षेश शुभ हों तो शुभ फल की अधिकता होती है। मासेश व वर्षेश में एक शुभ व एक अशुभ हो तो मिला जुला, सहन करने योग्य अशुभ फल होता है। देवल ने भी ऐसा ही कहा है।

बली वर्षपतिः पुष्टं फलं यच्छति शोभनम्।
विबलश्च तथानिष्टं वर्षमासदिनात्मकम्।। (देवल)

इति श्रीमहामतिवराहमिहिराचार्यकृतायां बृहत्संहितायां पं. सुरेशमिश्रकृतेऽभिनव हिन्दीभाष्ये ग्रहवर्षफलाध्याय एकोनविशः।। 19।।

Scanned with CamScanner